हारुकी मुराकामी

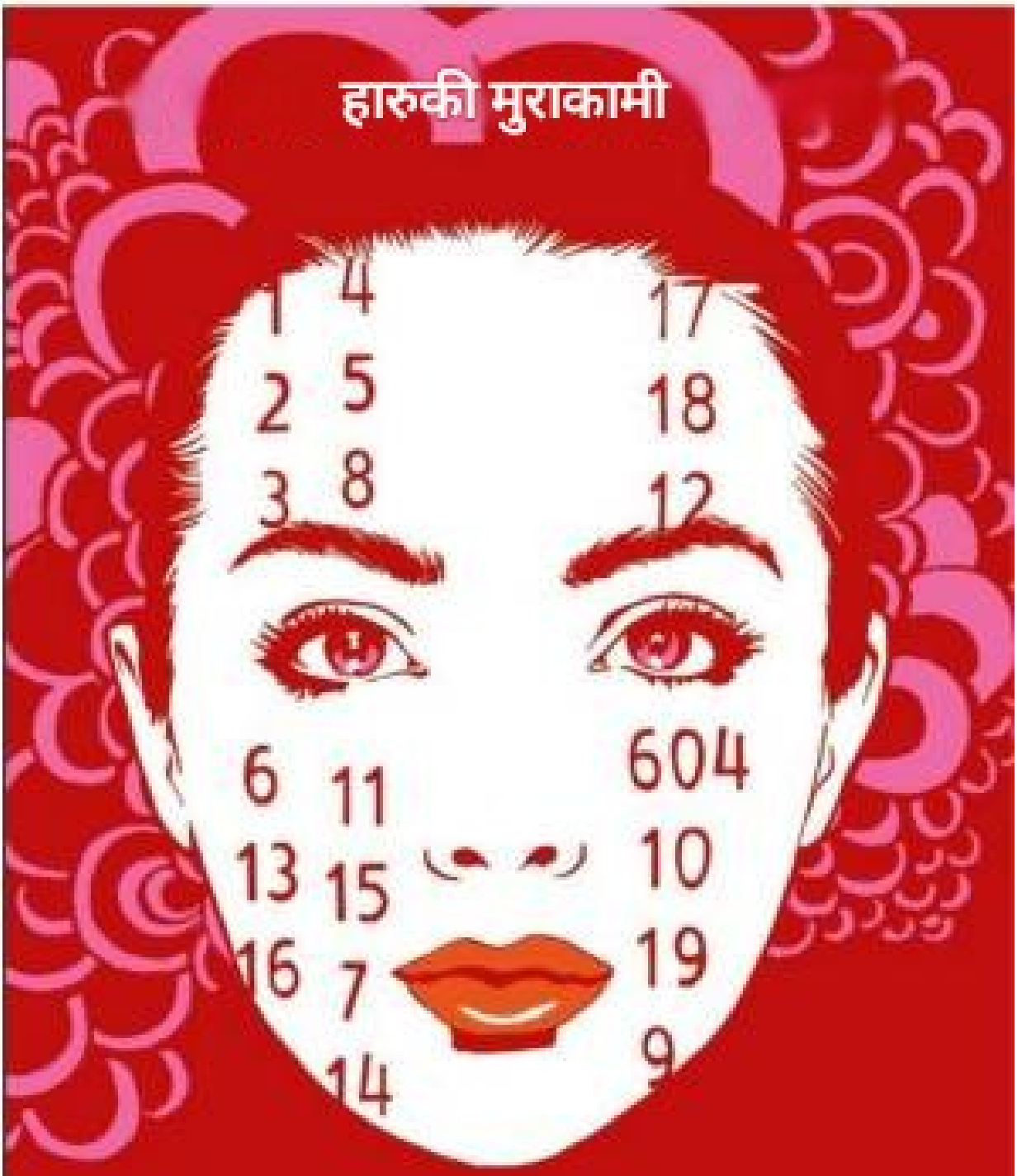

जन्मदिन वाली लड़की

हारुकी मुराकामी द्वारा रचित "जन्मदिन की लड़की"

अपने बीसवें जन्मदिन पर, हमेशा की तरह उसने रेस्टोरेंट में खाना परोसा। वह हमेशा शुक्रवार को काम करती थी, लेकिन अगर उस शुक्रवार को सब कुछ योजना के मुताबिक होता, तो उसे छुट्टी मिल जाती। दूसरी पार्ट-टाइम लड़की ने बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी शिफ्ट बदलने के लिए हामी भर दी थी: गुस्से में भरे शेफ की डांट सुनना और ग्राहकों की मेजों पर कद्दू के ग्नोची और सीफूड फ्रिटो परोसना, बीसवां जन्मदिन मनाने का कोई सामान्य तरीका नहीं था। लेकिन दूसरी लड़की की सर्दी बढ़ गई थी और उसे लगातार दस्त और 104 डिग्री बुखार था, इसलिए उसे अचानक ही काम करना पड़ा।

उसने बीमार लड़की को दिलासा देने की कोशिश की, जिसने माफी मांगने के लिए फोन किया था। उसने कहा, "चिंता मत करो। वैसे भी, मैं कुछ खास करने वाली नहीं थी, भले ही आज मेरा बीसवां जन्मदिन हो।"

और सच कहें तो वह उतनी निराश भी नहीं थी। एक वजह यह थी कि कुछ दिन पहले उसका अपने उस प्रेमी से ज़बरदस्त झगड़ा हुआ था, जिसके साथ उसे उस रात होना था। वे हाई स्कूल के समय से साथ थे, और झगड़ा मामूली सी बात से शुरू हुआ था। लेकिन बात अचानक बिगड़ गई और एक लंबी, तीखी और चीख-पुकार वाली लड़ाई में बदल गई – इतनी बुरी कि उसे पूरा यकीन था कि उनके लंबे समय से चले आ रहे रिश्ते हमेशा के लिए टूट गए। उसके अंदर कुछ पत्थर जैसा कठोर हो गया था और मर गया था। उस झगड़े के बाद से उसने उसे फोन नहीं किया था, और वह भी उसे फोन करने वाली नहीं थी।

उसका कार्यस्थल टोक्यो के पॉश रोप्पोंगी इलाके में स्थित मशहूर इतालवी रेस्तरांओं में से एक था। यह रेस्तरां साठ के दशक के उत्तरार्ध से चल रहा था, और हालांकि इसका खाना कोई बहुत आधुनिक नहीं था, फिर भी इसकी उच्च प्रतिष्ठा पूरी तरह से जायज़ थी। यहाँ कई नियमित ग्राहक आते थे, और वे कभी निराश नहीं होते थे। भोजन कक्ष का वातावरण शांत और सुकून भरा था, जिसमें ज़रा भी दबाव नहीं था। यहाँ युवाओं की भीड़ के बजाय, ज़्यादातर उम्रदराज़ लोग आते थे, जिनमें कुछ प्रसिद्ध रंगमंच कलाकार और लेखक भी शामिल थे।

दो पूर्णकालिक वेटर सप्ताह में छह दिन काम करते थे। वह और दूसरी अंशकालिक वेट्रेस छात्राएँ थीं, जो बारी-बारी से तीन-तीन दिन काम करती थीं। इसके अलावा, एक फ्लोर मैनेजर था और काउंटर पर एक दुबली-पतली अधेड़ उम्र की महिला थी, जो कथित तौर पर रेस्टोरेंट खुलने के समय से ही वहाँ काम कर रही थी – मानो किसी उदास बूढ़ी महिला की तरह एक ही जगह पर बैठी रहती थी। उसके दो ही काम थे: मेहमानों से भुगतान लेना और फोन का जवाब देना। वह केवल ज़रूरत पड़ने पर ही बोलती थी और हमेशा एक ही काली पोशाक पहनती थी। उसमें कुछ ठंडापन और कठोरता थी: अगर उसे रात के अंधेरे में समुद्र में छोड़ दिया जाए, तो वह शायद किसी भी नाव को डुबो सकती है जो उससे टकरा जाए।

फ्लोर मैनेजर की उम्र शायद चालीस के आसपास थी। लंबा और चौड़े कंधों वाला उसका शरीर देखकर लगता था कि जवानी में वह खिलाड़ी रहा होगा, लेकिन अब उसके पेट और ठुड्डी पर चर्बी जमा होने लगी थी। उसके छोटे, कड़े बाल सिर के ऊपरी हिस्से से झड़ने लगे थे, और उससे एक बुढ़ापे वाले कुंवारे की खास गंध आती थी—जैसे किसी दराज में खांसी की दवाइयों के साथ रखे अखबार की गंध। उसका एक कुंवारा चाचा था जिसकी गंध भी ऐसी ही थी।

मैनेजर हमेशा काला सूट, सफेद कमीज और बो टाई पहनता था – कोई साधारण टाई नहीं, बल्कि असली, हाथ से बंधी हुई। उसे इस बात पर गर्व था कि वह बिना शीशे में देखे भी एकदम सही तरीके से टाई बांध सकता था। उसका काम मेहमानों के आने-जाने पर नज़र रखना, बुकिंग का ध्यान रखना, नियमित ग्राहकों के नाम याद रखना, मुस्कुराते हुए उनका स्वागत करना, ग्राहकों की शिकायतों को ध्यान से सुनना, वाइन के बारे में विशेषज्ञ सलाह देना और वेटर व वेट्रेस के काम की देखरेख करना था। वह प्रतिदिन कुशलतापूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वाह करता था। रेस्टोरेंट के मालिक के कमरे में खाना पहुंचाना भी उसका विशेष कार्य था।

उन्होंने कहा, "रेस्तरां मालिक का उसी इमारत की छठी मंजिल पर अपना कमरा था जहां रेस्तरां स्थित था।"

"एक अपार्टमेंट या ऑफिस या कुछ और।"

किसी तरह हम दोनों अपनी बीसवीं जन्मदिन की बात करने लगे – कि हम दोनों के लिए वह दिन कैसा रहा था। ज्यादातर लोगों को अपना बीसवां जन्मदिन याद रहता है। उसका तो दस साल से भी ज्यादा पहले हो चुका था।

“हालांकि, वह कभी भी रेस्टोरेंट में नज़र नहीं आता था। उसे देखने वाला एकमात्र व्यक्ति मैनेजर था। मालिक का खाना उस तक पहुँचाना ही उसका काम था। बाकी किसी भी कर्मचारी को नहीं पता था कि वह कैसा दिखता है।”

"तो, असल में, मालिक अपने ही रेस्टोरेंट से होम डिलीवरी मंगवा रहा था।"

“हाँ,” उसने कहा। “हर रात आठ बजे मैनेजर को मालिक के कमरे में खाना लाना पड़ता था। यह रेस्टोरेंट का सबसे व्यस्त समय होता था, इसलिए मैनेजर का ठीक उसी समय गायब हो जाना हमारे लिए हमेशा परेशानी का सबब होता था, लेकिन कोई चारा नहीं था क्योंकि यही हमेशा से होता आया था। वे खाने को उन गाड़ियों में से एक पर लादते थे जिनका इस्तेमाल होटल रूम सर्विस के लिए करते हैं, मैनेजर सम्मान का भाव लिए उसे लिफ्ट में ले जाता था, और पंद्रह मिनट बाद खाली हाथ लौट आता था। फिर, एक घंटे बाद, वह फिर ऊपर जाता और खाली प्लेटों और गिलासों से भरी गाड़ी नीचे लाता। बिल्कुल घड़ी की सुई की तरह, हर दिन। जब मैंने पहली बार ऐसा होते देखा तो मुझे बहुत अजीब लगा। यह किसी धार्मिक अनुष्ठान जैसा था, आप जानते हैं? हालाँकि, कुछ समय बाद मुझे इसकी आदत हो गई और मैंने इस बारे में फिर कभी नहीं सोचा।”

मालिक हमेशा चिकन ही बनाते थे। रेसिपी और सब्ज़ियों का साइड डिश हर दिन थोड़ा अलग होता था, लेकिन मुख्य व्यंजन हमेशा चिकन ही होता था। एक युवा शेफ ने एक बार उन्हें बताया कि उसने एक हफ्ते तक हर दिन एक ही तरह का भुना हुआ चिकन भेजा, यह देखने के लिए कि क्या होता है, लेकिन कभी कोई शिकायत नहीं आई। ज़ाहिर है, एक शेफ खाना बनाने के अलग-अलग तरीके आज़माना चाहता है, और हर नया शेफ चिकन बनाने की हर तकनीक को आज़माकर खुद को चुनौती देता था। वे बढ़िया सॉस बनाते, अलग-अलग सप्लायर से चिकन मंगवाते, लेकिन उनके किसी भी प्रयास का कोई असर नहीं हुआ: मानो वे

किसी खाली गुफा में पत्थर फेंक रहे हों। आखिरकार, सभी ने हार मान ली और मालिक को हर दिन एक ही तरह का साधारण चिकन व्यंजन भेज दिया। उनसे बस यही उम्मीद की जाती थी।

17 नवंबर को, उसके बीसवें जन्मदिन पर, काम हमेशा की तरह शुरू हुआ। दोपहर से ही रुक-रुक कर बारिश हो रही थी और शाम होते-होते तेज बारिश होने लगी। शाम पाँच बजे मैनेजर ने कर्मचारियों को इकट्ठा किया और उन्हें दिन के खास व्यंजनों के बारे में बताया। वेटरों को उन्हें शब्दशः याद करना था और उन्हें किसी भी तरह की नकल करने की अनुमति नहीं थी: वील मिलानीज़, सार्डिन और पत्तागोभी से सजा पास्ता, चेस्टनट मूस। कभी-कभी मैनेजर किसी ग्राहक की भूमिका निभाकर उनसे सवाल पूछकर उनकी परीक्षा लेता था। फिर कर्मचारियों के खाने का समय आया: इस रेस्टोरेंट में काम करने वाले वेटर ग्राहकों के ऑर्डर लेते समय भूखे पेट नहीं रख सकते थे!

रेस्तरां सुबह छह बजे खुला, लेकिन भारी बारिश के कारण मेहमान देर से आए और कई बुकिंग रद्द करनी पड़ीं। महिलाएं नहीं चाहती थीं कि बारिश से उनके कपड़े खराब हों। मैनेजर चुपचाप इधर-उधर घूम रही थी और वेटर नमक-मिर्च के डिब्बे चमकाकर या शेफ से खाना पकाने के बारे में बातें करके समय बिता रहे थे। उसने डाइनिंग रूम का जायजा लिया, जहां एक मेज पर एक अकेला जोड़ा बैठा था, और छत पर लगे स्पीकरों से धीरे-धीरे बज रहे हार्सिचॉर्ड के संगीत को सुन रही थी। शरद ऋतु की बारिश की गहरी महक रेस्तरां में फैल रही थी।

साढ़े सात बज चुके थे जब मैनेजर को अचानक तबीयत खराब लगने लगी। वह लड़खड़ाते हुए एक कुर्सी पर जा बैठा और कुछ देर तक पेट दबाकर बैठा रहा, मानो उसे अचानक गोली लग गई हो। उसके माथे पर चिपचिपा पसीना जमा हुआ था। उसने बुदबुदाते हुए कहा, "मुझे लगता है अस्पताल जाना चाहिए।" उसके लिए स्वास्थ्य संबंधी समस्या होना एक बहुत ही असामान्य बात थी: दस साल से भी पहले इस रेस्टोरेंट में काम शुरू करने के बाद से उसने कभी एक दिन की भी छुट्टी नहीं ली थी। उसे इस बात पर गर्व था कि वह कभी बीमारी या चोट के कारण काम से अनुपस्थित नहीं रहा था, लेकिन उसके दर्द भरे चेहरे से साफ पता चल रहा था कि उसकी हालत बहुत खराब है।

वह छाता लेकर बाहर निकली और एक टैक्सी रोकी। एक वेटर ने मैनेजर को सहारा दिया और उसे पास के अस्पताल ले जाने के लिए उसके साथ कार में बैठ गया। टैक्सी में बैठने से पहले, मैनेजर ने धीमी और भारी आवाज़ में उससे कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम रात आठ बजे कमरा नंबर 604 में खाना पहुँचा दो। तुम्हें बस घंटी बजानी है, कहना है, 'तुम्हारा खाना आ गया है,' और उसे वहीं छोड़ देना है।"

“वह कमरा नंबर 604 है, है ना?” उसने कहा।

“ठीक आठ बजे,” उसने दोहराया। “बिल्कुल सही समय पर।” उसने फिर मुंह बनाया, गाड़ी में बैठा और टैक्सी उसे ले गई। मैनेजर के जाने के बाद भी बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी और ग्राहक काफी देर-देर से आ रहे थे। एक समय में एक या दो से ज़्यादा टेबल भरी नहीं होती थीं, इसलिए अगर मैनेजर और एक वेटर को अनुपस्थित रहना पड़ता, तो यही सही समय होता था। कभी-कभी इतनी भीड़ हो जाती थी कि पूरे स्टाफ के लिए भी काम संभालना मुश्किल हो जाता था।

जब मालिक का खाना आठ बजे तैयार हो गया, तो उसने रूम-सर्विस कार्ट को लिफ्ट में धकेला और छठी मंज़िल पर चली गई। उसका खाना हमेशा की तरह ही था: कॉर्क खुली हुई आधी बोतल रेड वाइन, एक गर्म कॉफी, उबली हुई सब्जियों के साथ चिकन, डिनर रोल और मक्खन। पके हुए चिकन की तेज़ खुशबू जल्दी ही छोटी सी लिफ्ट में भर गई। यह बारिश की गंध के साथ मिल गई। लिफ्ट के फर्श पर पानी की बूँदें थीं, जिससे लग रहा था कि हाल ही में कोई गीली छतरी लेकर आया था।
जहाज पर।

वह गाड़ी को गलियारे में धकेलती हुई ले गई और उसे "604" लिखे दरवाजे के सामने रोक दिया। उसने अपनी याददाश्त पर फिर से गौर किया: 604। यही था। उसने गला साफ किया और दरवाजे के पास वाला बटन दबाया। कोई जवाब नहीं आया। वह लगभग बीस सेकंड तक वहीं खड़ी रही। जैसे ही वह दोबारा घंटी बजाने की सोच रही थी, दरवाजा अंदर की ओर खुला और एक दुबला-पतला बूढ़ा आदमी दिखाई दिया। वह उससे लगभग चार-पाँच इंच छोटा था। उसने गहरे रंग का सूट और टाई पहनी हुई थी। उसकी सफेद कमीज पर टाई का भूरा-पीला रंग सूखे पत्तों की तरह साफ दिखाई दे रहा था। वह बहुत साफ-सुथरा दिख रहा था, उसके कपड़े एकदम इस्त्री किए हुए थे, उसके सफेद बाल सँवारे हुए थे: ऐसा लग रहा था जैसे वह रात में

किसी समारोह में जाने वाला हो। उसकी भौंहों पर पड़ी गहरी झुर्रियों को देखकर उसे हवाई तस्वीर में दिखने वाली गहरी खाइयों की याद आ गई।

“आपका भोजन, महोदय,” उसने भारी आवाज़ में कहा, फिर धीरे से अपना गला साफ़ किया। तनाव होने पर उसकी आवाज़ भारी हो जाती थी।

"रात का खाना?"

"जी सर। मैनेजर अचानक बीमार पड़ गए। मुझे आज उनकी जगह काम करना पड़ा। आपका खाना, सर।"

“ओह, मैं समझ गया,” बूढ़े आदमी ने लगभग खुद से बात करते हुए कहा, उसका हाथ अभी भी दरवाजे के हैंडल पर टिका हुआ था।

“बीमार पड़ गए थे, है ना? कमाल है।”

"अचानक उसके पेट में तेज दर्द होने लगा। वह अस्पताल गया। उसे लगता है कि उसे अपेंडिसाइटिस हो सकता है।"

“ओह, यह तो अच्छा नहीं है,” बूढ़े आदमी ने अपने माथे की झुर्रियों पर उंगलियां फेरते हुए कहा। “बिल्कुल भी अच्छा नहीं है।”

उसने फिर से अपना गला साफ किया। "क्या मैं आपका खाना अंदर ले आऊं, महोदय?" उसने पूछा।

“जी हां, बिलकुल,” बूढ़े आदमी ने कहा। “जी हां, बिलकुल, अगर आप चाहें तो। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।”

अगर मैं चाहूँ? उसने सोचा। यह कहने का कितना अजीब तरीका है। मुझे क्या चाहना चाहिए?

बूढ़े आदमी ने दरवाज़ा पूरा खोला और वह ठेला अंदर ले गई। फर्श पर छोटी-छोटी भूरे रंग की कालीन बिछी थी, जहाँ जूते उतारने की कोई जगह नहीं थी। पहला कमरा एक बड़ा अध्ययन कक्ष था, मानो यह अपार्टमेंट रहने की जगह से ज़्यादा एक कार्यस्थल हो। खिड़की से पास ही टोक्यो टावर दिखाई दे रहा था, जिसकी स्टील की संरचना रोशनी से जगमगा रही थी। खिड़की के पास एक बड़ी मेज रखी थी, और उसके बगल में एक छोटा सा सोफा और एक छोटी सी कुर्सी थी। बूढ़े आदमी ने सोफे के सामने रखी प्लास्टिक की लैमिनेट वाली कॉफी टेबल की ओर इशारा किया। उसने मेज पर उनका खाना लगाया: सफेद नैपकिन और चम्मच-कांटा, कॉफी पॉट और कप, वाइन और वाइन ग्लास, ब्रेड और मक्खन, और चिकन और सब्जियों की प्लेट।

“अगर आप कृपा करके हमेशा की तरह खाना हॉल में रख दें, महोदय, तो मैं एक घंटे में आकर ले जाऊंगी।” उनके शब्दों ने मानो उन्हें अपने खाने के आनंद में डूबे रहने से जगा दिया। “जी हाँ, बिल्कुल। मैं उन्हें हॉल में रख दूंगा। गाड़ी पर। एक घंटे में। अगर आप चाहें तो।”

हां, उसने मन ही मन जवाब दिया, फिलहाल तो मेरी यही इच्छा है। "क्या मैं आपके लिए कुछ और कर सकती हूं, महोदय?"

“नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,” उन्होंने कुछ देर सोचने के बाद कहा। उन्होंने काले रंग के चमकदार जूते पहने हुए थे। वे छोटे और स्टाइलिश थे। वह बहुत ही सलीके से कपड़े पहनते हैं, उसने सोचा। और अपनी उम्र के हिसाब से वे बहुत सीधे खड़े होते हैं।

"ठीक है, तो महोदय, मैं काम पर वापस जा रहा हूँ।"

“नहीं, बस एक पल रुकिए,” उन्होंने कहा।

"महोदय?"

"क्या आप मुझे पांच मिनट का समय दे सकती हैं, महोदया? मुझे आपसे कुछ कहना है।"

उसने इतनी विनम्रता से अनुरोध किया कि वह शरमा गई। “मुझे लगता है कि ठीक रहेगा,” उसने कहा। “मतलब, अगर सच में सिर्फ पाँच मिनट की बात है तो।” आखिर वह उसका मालिक था। वह उसे घंटे के हिसाब से भुगतान करता था। यह उसके समय देने या उसके समय लेने का सवाल नहीं था। और यह बूढ़ा आदमी ऐसा नहीं दिखता था कि वह उसके साथ कुछ बुरा करेगा।

“वैसे, आपकी उम्र कितनी है?” बूढ़े व्यक्ति ने मेज के पास खड़े होकर, हाथ बांधकर और सीधे उसकी आँखों में देखते हुए पूछा।

“मैं अब बीस साल की हो गई हूँ,” उसने कहा।

“अब बीस,” उसने अपनी आँखें सिकोड़ते हुए दोहराया, मानो किसी दरार से झाँक रहा हो। “अब बीस।”

कब से?

“जी हां, मैं अभी बीस साल की हुई हूं,” उसने कहा। कुछ पल हिचकिचाने के बाद उसने आगे कहा, “आज मेरा जन्मदिन है, महोदय।”

“अच्छा समझ गया,” उसने अपनी ठुड्डी सहलाते हुए कहा, मानो इससे बहुत कुछ स्पष्ट हो गया हो। “आज है ना? आज तुम्हारा बीसवाँ जन्मदिन है?”

उसने चुपचाप सिर हिलाया।

“इस दुनिया में आपका जीवन ठीक बीस साल पहले आज ही के दिन शुरू हुआ था।”

“जी हां, श्रीमान,” उसने कहा, “यह सच है।”

“मैं समझ गया, मैं समझ गया,” उसने कहा। “यह बहुत बढ़िया है। अच्छा, तो जन्मदिन मुबारक हो।”

“बहुत-बहुत धन्यवाद,” उसने कहा, और फिर उसे एहसास हुआ कि पूरे दिन में यह पहली बार था जब किसी ने उसे जन्मदिन की शुभकामनाएँ दी थीं। बेशक, अगर उसके माता-पिता ने ओइटा से फोन किया होता, तो काम से घर लौटने पर उसे अपने आंसरिंग मशीन पर उनका संदेश मिल सकता था।

“वाह वाह, यह तो वाकई जश्न मनाने का मौका है,” उन्होंने कहा। “थोड़ा सा टोस्ट क्यों न करें? हम यह रेड वाइन पी सकते हैं।”

“धन्यवाद महोदय, लेकिन मैं नहीं कर सकता। मैं अभी काम कर रहा हूँ।”

“अरे, एक घूंट पीने में क्या हर्ज है? अगर मैं कहूँ कि ठीक है तो कोई आपको दोष नहीं देगा। बस जश्न के लिए एक छोटी सी घूंट।”

बूढ़े आदमी ने बोतल का ढक्कन खोला और उसके लिए अपने गिलास में थोड़ी सी शराब डाली। फिर उसने कांच के दरवाजे वाली अलमारी से एक साधारण गिलास निकाला और अपने लिए भी थोड़ी शराब डाली।

“जन्मदिन मुबारक हो,” उन्होंने कहा। “आपका जीवन समृद्ध और फलदायी हो, और आपके जीवन पर कोई भी अंधकारमय साया न पड़े।”

उन्होंने गिलास आपस में टकराए।

"काश ऐसा कुछ भी न हो जो इस पर अंधकार की छाया डाले:" उसने मन ही मन उसकी बात दोहराई। उसने जन्मदिन की शुभकामना के लिए ऐसे असामान्य शब्द क्यों चुने थे?

“आपका बीसवां जन्मदिन जीवन में केवल एक बार आता है, महोदया। यह एक अनमोल दिन है।”

"जी सर, मुझे पता है," उसने वाइन का एक सावधानीपूर्वक घूंट लेते हुए कहा।

और आज, आपके इस खास दिन पर, आपने एक दयालु परी की तरह मेरा खाना मुझ तक पहुंचाने की जहमत उठाई है।

"मैं बस अपना काम कर रहा हूँ, महोदय।"

“लेकिन फिर भी,” बूढ़े आदमी ने सिर को कुछ बार जल्दी से हिलाते हुए कहा। “लेकिन फिर भी, प्यारी युवती।”

बूढ़ा आदमी अपनी मेज के पास चमड़े की कुर्सी पर बैठ गया और उसे सोफे पर बैठने का इशारा किया। वह धीरे से सोफे के किनारे पर बैठ गई, उसके हाथ में शराब का गिलास था। घुटने सीधे करके उसने अपनी स्कर्ट को खींचा और फिर से गला साफ किया। उसने खिड़की के शीशे पर बारिश की बूंदों को लकीरें बनाते देखा। कमरा अजीब तरह से शांत था।

“आज संयोग से तुम्हारा बीसवाँ जन्मदिन है, और ऊपर से तुम मेरे लिए यह स्वादिष्ट गरमा गरम खाना भी लाए हो,” बूढ़े आदमी ने कहा, मानो स्थिति की पुष्टि कर रहा हो। फिर उसने अपना गिलास हल्के से पटक दिया। “यह तो किसी खास संयोग की बात है, तुम्हें नहीं लगता?”
पूरी तरह आश्वस्त न होते हुए भी, उसने सिर हिलाकर सहमति जताई।

“इसीलिए,” उसने अपनी मुरझाई हुई पत्ती के रंग की टाई की गांठ को छूते हुए कहा, “मुझे लगता है कि आपको जन्मदिन का उपहार देना मेरे लिए महत्वपूर्ण है। एक खास जन्मदिन पर एक खास यादगार उपहार तो बनता ही है।”

घबराकर उसने सिर हिलाया और कहा, "नहीं, महोदय, इस बारे में दोबारा मत सोचिए। मैंने तो बस आपका खाना उसी तरह लाया है जैसे उन्होंने मुझे आदेश दिया था।"

बूढ़े आदमी ने दोनों हाथ ऊपर उठाए, हथेलियाँ उसकी ओर थीं। “नहीं, मिस, आप इसके बारे में ज़्यादा मत सोचिए। जिस तरह के ‘उपहार’ के बारे में मैं सोच रहा हूँ, वह कोई भौतिक वस्तु नहीं है, न ही कोई ऐसी चीज़ है जिसकी कोई कीमत हो। सीधे शब्दों में कहूँ तो”—उसने अपने हाथ मेज पर रखे और एक लंबी, धीमी साँस

ली—“मैं आप जैसी प्यारी युवा परी के लिए जो करना चाहता हूँ, वह यह है कि मैं आपकी कोई इच्छा पूरी कर दूँ, आपकी कोई भी इच्छा पूरी कर दूँ। कुछ भी। आपकी जो भी इच्छा हो—बशर्ते कि आपकी कोई इच्छा हो।”

“एक इच्छा?” उसने सूखे गले से पूछा।

“आपकी कोई इच्छा हो, महोदया। अगर आपकी कोई एक इच्छा हो—सिर्फ एक इच्छा, तो मैं उसे पूरा कर दूंगा। यही वो जन्मदिन का तोहफा है जो मैं आपको दे सकता हूँ। लेकिन आप इसके बारे में बहुत सोच-समझकर फैसला लें, क्योंकि मैं सिर्फ एक ही तोहफा दे सकता हूँ।” उन्होंने एक उंगली हवा में उठाई। “सिर्फ एक। बाद में आप अपना मन नहीं बदल सकतीं और इसे वापस नहीं ले सकतीं।”

वह कुछ कह नहीं पा रही थी। एक इच्छा? हवा के झोंकों से बारिश की बूँदें खिड़की के शीशे पर अनियमित रूप से पड़ रही थीं। जब तक वह चुप रही, बूढ़ा आदमी उसकी आँखों में देखता रहा, कुछ नहीं बोला। समय की अनियमित धड़कन उसके कानों में गूंज रही थी।

"क्या मुझे किसी चीज की कामना करनी होगी, और वह पूरी हो जाएगी?"

उसके सवाल का जवाब देने के बजाय, बूढ़े आदमी ने - जिसके हाथ अभी भी मेज पर अगल-बगल रखे थे - बस मुस्कुरा दिया। उसने यह बड़े ही स्वाभाविक और सौहार्दपूर्ण तरीके से किया।

“क्या आपकी कोई इच्छा है, महोदया—या नहीं?” उन्होंने विनम्रता से पूछा।

“यह सचमुच हुआ था,” उसने मेरी ओर सीधे देखते हुए कहा। “मैं झूठ नहीं बोल रही हूँ।”

“बिल्कुल नहीं,” मैंने कहा। वह ऐसी इंसान नहीं थी जो मनगढ़ंत कहानियाँ बना दे। “तो... क्या तुमने कोई इच्छा माँगी?”

वह कुछ देर तक मुझे देखती रही, फिर एक हल्की सी आह भरी। "मुझे गलत मत समझिए," उसने कहा। "मैं भी उसकी बात को पूरी तरह गंभीरता से नहीं ले रही थी। मतलब, बीस साल की उम्र में आप किसी काल्पनिक दुनिया में तो नहीं जी रहे होते। लेकिन अगर यही उसका मजाक था, तो मैं उसकी इस बात की तारीफ करती हूँ कि उसने मौके पर ही ऐसा मजाक सोच लिया।"

वह एक सलीकेदार बूढ़ा आदमी था जिसकी आँखों में चमक थी, इसलिए मैंने उसके साथ खेलने का फैसला किया। आखिर यह मेरा बीसवाँ जन्मदिन था: मैंने सोचा कि उस दिन मेरे साथ कुछ असाधारण घटित होना चाहिए। यह विश्वास करने या न करने का सवाल ही नहीं था।

मैंने बिना कुछ कहे सिर हिला दिया।

"मुझे यकीन है कि आप समझ सकते हैं कि मुझे कैसा महसूस हुआ। मेरा बीसवां जन्मदिन बिना किसी खास बात के खत्म हो रहा था, किसी ने मुझे जन्मदिन की बधाई नहीं दी, और मैं बस लोगों की मेजों पर एंकोवी सॉस के साथ टोर्टेलिनी परोस रहा था।"

मैंने फिर सिर हिलाया। “चिंता मत करो,” मैंने कहा। “मैं समझता हूँ।”

तो मैंने एक इच्छा मांगी।

बूढ़े व्यक्ति की निगाहें उस पर टिकी हुई थीं, वह कुछ नहीं बोले, उनके हाथ अभी भी मेज पर थे। मेज पर कई मोटी-मोटी फाइलें भी थीं जो शायद हिसाब-किताब की किताबें थीं, साथ ही लिखने का सामान, एक कैलेंडर और हरे रंग के शेड वाला एक लैंप भी था। उनके बीच पड़े उनके छोटे हाथ मेज पर रखे फर्नीचर के एक और सेट की तरह लग रहे थे।

बारिश की बूँदें लगातार शीशे पर पड़ रही थीं, और टूटी हुई बूंदों से टोक्यो टॉवर की रोशनी छनकर दिखाई दे रही थी।

बूढ़े आदमी के माथे की झुर्रियाँ थोड़ी और गहरी हो गईं। "क्या यही आपकी इच्छा है?"

“हां,” उसने कहा। “यही मेरी इच्छा है।”

“तुम्हारी उम्र की लड़की के लिए यह थोड़ा असामान्य है,” उसने कहा। “मुझे कुछ अलग उम्मीद थी।”

“अगर यह ठीक नहीं है, तो मैं कुछ और चाहूँगी,” उसने गला साफ़ करते हुए कहा। “मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैं कुछ और सोच लूँगी।”

“नहीं नहीं,” बूढ़े आदमी ने अपने हाथ झंडे की तरह लहराते हुए कहा। “इसमें कुछ भी गलत नहीं है, बिलकुल भी नहीं। बस थोड़ा आश्चर्य हो रहा है, मैडम। क्या आपकी कोई और इच्छा नहीं है? जैसे, मान लीजिए, आप और सुंदर, या बुद्धिमान, या अमीर बनना चाहती हैं? क्या आप ऐसी किसी चीज की इच्छा न करने में ठीक हैं —ऐसी इच्छा जो एक आम लड़की करती है?”

सही शब्द ढूंढने में उसे कुछ पल लगे। बूढ़ा आदमी बस इंतजार करता रहा, कुछ नहीं बोला, उसके हाथ फिर से मेज पर एक साथ टिके हुए थे।

“बेशक मैं और खूबसूरत, और बुद्धिमान या और अमीर बनना चाहूँगी। लेकिन मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि अगर इनमें से कोई भी बात सच हो जाए तो मेरा क्या होगा। शायद ये मेरे बस की बात न हो। मुझे अब भी ठीक से नहीं पता कि ज़िंदगी क्या होती है। मुझे नहीं पता कि ये कैसे चलती है।”

“मैं समझ गया,” बूढ़े आदमी ने अपनी उंगलियों को आपस में फंसाते और फिर अलग करते हुए कहा। “मैं समझ गया।”

तो क्या मेरी यह इच्छा जायज़ है?

“बिल्कुल,” उन्होंने कहा। “बिल्कुल। मुझे इसमें कोई परेशानी नहीं है।”

बूढ़े आदमी की निगाहें अचानक हवा में एक बिंदु पर टिक गईं। उसके माथे की झुर्रियाँ और गहरी हो गईं: शायद ये उसके दिमाग की झुर्रियाँ थीं जो विचारों में लीन होकर झुर्रियाँ बना रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी चीज़ को घूर रहा हो—शायद हवा में तैरते हुए लगभग अदृश्य रुई के कणों को। उसने अपनी बाहें चौड़ी कीं, कुर्सी से थोड़ा उठा और सूखी आवाज़ के साथ हथेलियों को आपस में टकराया। कुर्सी पर वापस बैठते हुए, उसने धीरे से अपनी उंगलियों को अपने माथे की झुर्रियों पर फेरा, मानो उन्हें नरम कर रहा हो, और फिर एक कोमल मुस्कान के साथ उसकी ओर मुड़ा।

“बस यही काफी था,” उसने कहा। “तुम्हारी मनोकामना पूरी हो गई।”

"पहले से?"

जी हां, कोई परेशानी नहीं हुई। आपकी इच्छा पूरी हो गई है, प्यारी मैडम। जन्मदिन मुबारक हो। अब आप काम पर जा सकती हैं। चिंता मत कीजिए, मैं गाड़ी को हॉल में रख दूंगा।

वह लिफ्ट से नीचे रेस्तरां तक गई। अब खाली हाथ होने के बावजूद, उसे अजीब तरह से हल्कापन महसूस हो रहा था, मानो वह किसी रहस्यमय रुई पर चल रही हो।

“क्या तुम ठीक हो? तुम खोई-खोई सी लग रही हो,” युवा वेटर ने उससे कहा।

उसने उसे एक अस्पष्ट मुस्कान दी और सिर हिलाया। "ओह, सच में? नहीं, मैं ठीक हूँ।"

“मुझे मालिक के बारे में बताओ। वह कैसा है?”

"मुझे नहीं पता, मैंने उसे ठीक से नहीं देखा," उसने बातचीत को बीच में ही रोकते हुए कहा।

एक घंटे बाद वह ठेला नीचे लाने गई। ठेला हॉल में रखा था, बर्तन अपनी जगह पर थे। उसने ढक्कन उठाया तो देखा कि चिकन और सब्जियां गायब थीं। शराब की बोतल और कॉफी का जग खाली थे। कमरा नंबर 604 का दरवाजा बंद और भावहीन था। वह कुछ देर तक उसे देखती रही, मानो किसी भी क्षण खुल जाए, लेकिन वह नहीं खुला। वह लिफ्ट से ठेला नीचे लाई और उसे डिशवॉशर में रख दिया। शेफ ने हमेशा की तरह खाली प्लेट को देखा और भावहीनता से सिर हिलाया।

“मैंने मालिक को फिर कभी नहीं देखा,” उसने कहा। “एक बार भी नहीं। मैनेजर को बस मामूली पेट दर्द हुआ था और अगले दिन वह खुद मालिक को खाना पहुंचाने चला गया। मैंने नए साल के बाद नौकरी छोड़ दी और तब से उस जगह पर कभी नहीं गई। पता नहीं, मुझे बस ऐसा लगा कि वहां न जाना ही बेहतर है, जैसे कोई पूर्वाभास हो।”

वह कागज़ के एक कोस्टर से खेल रही थी और अपने विचारों में खोई हुई थी। “कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि मेरे बीसवें जन्मदिन पर जो कुछ भी हुआ, वह एक तरह का भ्रम था। ऐसा लगता है जैसे कुछ ऐसा हुआ हो जिससे मुझे लगे कि कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं जो वास्तव में कभी हुई ही नहीं थीं। लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि वे सब घटी थीं। मुझे आज भी कमरा नंबर 604 के हर फर्नीचर और हर छोटी-मोटी चीज़ की स्पष्ट छवियाँ याद हैं। वहाँ मेरे साथ जो कुछ भी हुआ, वह सचमुच हुआ था, और उसका मेरे लिए बहुत महत्व भी था।”

हम दोनों कुछ देर तक चुप रहे, अपने-अपने पेय पीते रहे और अपने-अपने विचारों में खोए रहे।

“क्या मैं आपसे एक बात पूछ सकता हूँ?” मैंने पूछा। “या, अधिक सटीक रूप से, दो बातें।”

“ज़रूर पूछिए,” उसने कहा। “मुझे लगता है कि आप मुझसे पूछेंगे कि मैंने उस समय क्या इच्छा की थी। यही पहली बात होगी जो आप जानना चाहेंगे।”

लेकिन ऐसा लगता है कि आप इस बारे में बात नहीं करना चाहते।

"क्या यह?"

मेंने सिर हिलाया।

उसने कोस्टर नीचे रख दिया और अपनी आँखें इस तरह सिकोड़ लीं मानो वह दूर किसी चीज को घूर रही हो।

"तुम्हें पता है, तुम्हें किसी को यह नहीं बताना चाहिए कि तुमने क्या इच्छा की थी।"

मैंने कहा, "मैं तुमसे जबरदस्ती सच उगलवाने की कोशिश नहीं करूँगा। लेकिन मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हारी इच्छा पूरी हुई या नहीं। और यह भी कि तुम्हारी इच्छा चाहे जो भी रही हो, क्या तुम्हें बाद में उस इच्छा को लेकर पछतावा हुआ? क्या तुम्हें कभी इस बात का अफसोस हुआ कि तुमने कुछ और क्यों नहीं माँगा?"

पहले सवाल का जवाब हां भी है और ना भी। शायद अभी मुझे काफी लंबा जीवन जीना बाकी है। मैंने अभी तक यह नहीं देखा है कि अंत तक चीजें कैसे आगे बढ़ेंगी।

"तो यह एक ऐसी इच्छा थी जिसे पूरा होने में समय लगता है?"

“आप ऐसा कह सकते हैं। समय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।”

“जैसे कि कुछ खास व्यंजन पकाने में?”

उसने सिर हिलाया।

मैंने एक पल के लिए इसके बारे में सोचा, लेकिन मेरे दिमाग में केवल एक विशालकाय पाई की छवि आई जो धीमी आंच पर ओवन में धीरे-धीरे पक रही थी।

और मेरे दूसरे प्रश्न का उत्तर?

“वो क्या था?”

क्या आपको कभी अपनी मनचाही चीज़ चुनने पर पछतावा हुआ?

कुछ क्षणों का सन्नाटा छा गया। उसकी निगाहें मुझ पर टिकी हुई थीं, मानो उनमें कोई गहराई न हो। उसके होठों के कोनों पर एक फीकी सी मुस्कान झलक रही थी, जिससे मुझे एक तरह की खामोश निराशा का एहसास हुआ।

“अब मेरी शादी हो चुकी है,” उसने कहा। “मेरे पति एक चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीपीए) हैं जो मुझसे तीन साल बड़े हैं। मेरे दो बच्चे हैं, एक लड़का और एक लड़की। हमारे पास एक आयरिश सेटर कुत्ता है। मैं ऑडी चलाती हूँ और अपनी सहेलियों के साथ हफ्ते में दो बार टेनिस खेलती हूँ। यही मेरी आज की जिंदगी है।”

मैंने कहा, "मुझे तो यह काफी अच्छा लग रहा है।"

"क्या होगा अगर ऑडी के बम्पर पर दो डेंट हों?"

"अरे, बंपर तो डेंट लगने के लिए ही बने होते हैं।"

“यह एक बढ़िया बम्पर स्टिकर हो सकता है,” उसने कहा। “‘बम्पर तो डेंट मारने के लिए ही होते हैं।’”

जब उसने यह कहा तो मैंने उसके मुंह की तरफ देखा।

“मैं तुम्हें बस यही कहना चाहती हूँ,” उसने धीरे से कहा और अपने कान के निचले हिस्से को खुजलाया। उसका कान का निचला हिस्सा बेहद खूबसूरत था। “चाहे वे कुछ भी चाहें, चाहे वे कितनी भी दूर चले जाएँ, इंसान हमेशा वही होता है जो वह है। बस यही बात है।”

मैंने कहा, "एक और बढ़िया बम्पर स्टिकर है। 'लोग चाहे कितनी भी दूर चले जाएं, वे हमेशा खुद ही होते हैं।'"

वह खुलकर हंसी, मानो खुशी का इजहार कर रही हो, और परछाई गायब हो गई।

उसने अपनी कोहनी बार पर टिकाई और मेरी तरफ देखा। "बताओ," उसने कहा। "अगर तुम मेरी जगह होते तो क्या कामना करते?"

"मेरा मतलब है, मेरे बीसवें जन्मदिन की रात को?"

"अहां।"

मैंने इस बारे में सोचने के लिए कुछ समय लिया, लेकिन मुझे एक भी इच्छा समझ में नहीं आई।

मैंने स्वीकार किया, "मुझे कुछ भी याद नहीं आ रहा है। मेरा बीसवां जन्मदिन अब बहुत दूर है।"

"क्या आपको सच में कुछ सूझ नहीं रहा?"

मेंने सिर हिलाया।

“एक भी चीज नहीं?”

“बिल्कुल भी नहीं।”

उसने फिर से मेरी आँखों में सीधे देखा और कहा, "ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम पहले ही अपनी इच्छा बता चुके हो।"

-अंत-

sjeet